समकालीन भारतीय साहित्य : विविध विमर्श

विविध विधाओं के संदर्भ में

भाग -१

प्रधान संपादक

प्रो. सीताराम के. पवार

सह संपादक

प्रो. प्रभा भट्ट

डॉ. एल. पी. लमाणी

डॉ. शीला. चौगुले

डॉ. नीता दौलतकर

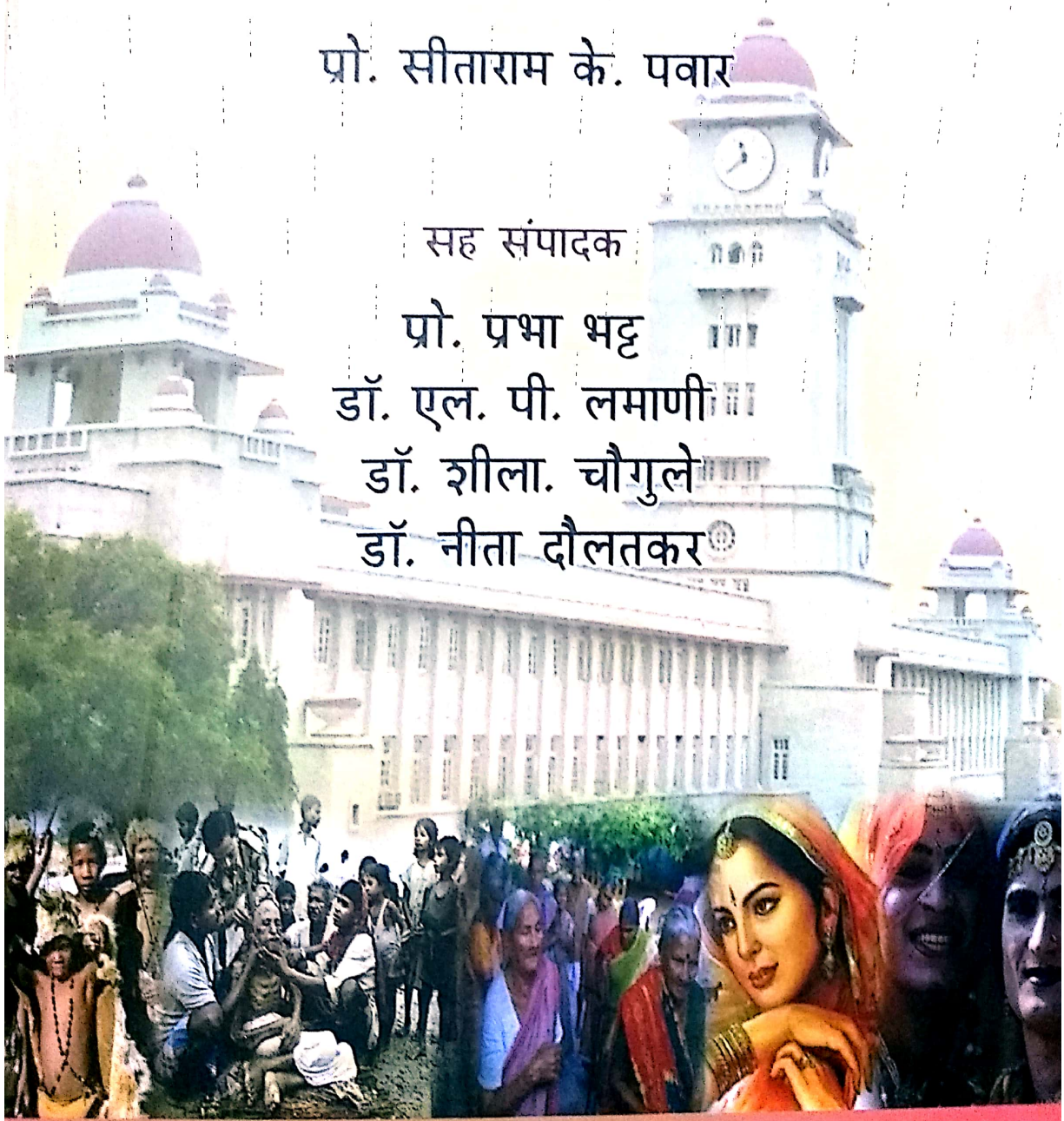

हिन्दी विभाग, कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड

Scanned by CamScanner

समकालीन हिन्दी साहित्य : विविध विमर्श

(Collective Essays Presented at International Conference on "Diverse Criticism in Contemporary Indian Literature)

प्रधान संपादक : प्रो. सीताराम के. पवार

© : प्रधान संपादक

प्रकाशक : अमन प्रकाशन कानपुर

मुद्रक : सरस्वति प्रिंटर्स, धारवाड

वर्ष : २०१८

पृष्ट : ६३१+१२

ISBN : 978-93-86604-74-3

मूल्य : ३००

प्रतियाँ : ३००

सभी हक सुरक्षित है ।

प्रस्तुत पुस्तक में प्रकाशित आलेख, विभिन्न विचार, आदि लेखक के हैं । अतः संपादक, संपादक मंडल, मुद्रक तथा प्रकाशन इसके लिए जिम्मेदार नहीं है ।

Scanned by CamScanner

168	वृद्ध विमर्श	सुनिता रा. हुजरी	469
169	समकालीन हिंदी साहित्य : विविध विमर्श - दलित विमर्श	प्रो.शंकर मूर्ती, के.एन.	471
170	आत्मकथात्मक उपन्यास दोहरा अभिशाप में चित्रित दलित जीवन का दर्दनाक यथार्थ	निशा मुरलिधरन	473
171	विवेकी राय के उपन्यासों में अभिव्यक्त दलित समाज का यथार्थ	शिंगाडे सचिन सदाशिव	475
172	समकालीन हिन्दी साहित्य किन्नर विमर्श	डॉ.चिलुका पुष्पलता	477
173	परित्यक्त किन्नरों की कथा - व्यथा	डॉ. राजशेखर.उ.जाधव	479
174.	हिन्दी कहानियों में किन्नरों का स्वागत	डॉ. मीनाक्षि पाटिल	481
175.	अपना लिंग उन्हें चुनने की स्वतंत्रता दीजिए	डॉ. पवन कुमार	483
176.	समकालीन हिन्दी साहित्य में अल्पसंख्यक विमर्श	प्रो. एम.एस.हुलगुर	485
177.	स्त्री विमर्श: हिन्दी साहित्य के संदर्भ में	Dr. Mallikarjunayya G.M	487
178.	मैत्रेयी पुष्पा के साहित्य में स्त्री विमर्श	प्रा. रईसा मिश्रा	489
179.	स्त्री विमर्श ? एक अध्ययन	एम.आई. चिन्दी	491
180.	समकालीन हिंदी कहानियाँ और स्त्री विमर्श	शक्तिराज	493
181.	समकालीन हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श	डॉ.मालती प्रकाश	495
182.	"महिला उपन्यास लेखन एवं स्त्री विमर्ष"	लेफ्टनंट डॉ.रविंद्र पाटील	497
183.	समाज के परित्यक्त किन्नर वर्ग की व्यथा कथा ।	डा. सुजाता पी. फातरपेखर	499
184.	समकालीन हिन्दी उपन्यासों में आदिवासी विमर्श	वी. गीता मालिनी	501
185.	यशपाल के उपन्यासों में स्त्री - विमर्श	वैशाली महादेव जाधव	503
186	स्त्री - विमर्श	यविजयश्रि भि गुडी	505
187	आधुनिक हिंदी उपन्यासों में नारी विमर्श	डा. उमा आर. हेगडे	507
188	मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में नारी विमर्श	प्रो.हसनखादी.एम.	509
189	स्त्री विमर्श: हिन्दी समकालीन उपन्यास साहित्य के संदर्भ में।	प्रतीक माली	511
190	दलित साहित्य हिन्दी साहित्य में दलित विमर्श	आनंद नायक	513
191	उषा प्रियम्वदा के उपन्यासों में नारी विमर्श	डॉ. हिंदुराव रा. घरपणकर,	514
192	समकालीन हिंदी कविताओं में स्त्री–विमर्ष	सौ. सुगंधा हिंदुराव घरपणकर	517
193	समकालीन कथा साहित्य में स्त्री विमर्श के मुद्द	रजनी शाह	520
194	भारतीय पाश्चात्य स्त्री विमर्श ? एक अध्ययन		522
195	लिम्बाले की कहानियों में अभिव्यक्त सामाजिक परिवेष (दलित परिप्रेक्ष्य में)	लक्ष्मी प्रसाद कर्श	524

Scanned by CamScanner

हिन्दी कहानियों में किन्नरों का स्वागत

डॉ. मीनाक्षि पाटिल

दुनिया के प्रत्येक देश में है। किन्नरों के अतीत और उद्भव से संबंधित अनेक अंतर्कथाएँ प्रचलित हैं, जो हमें पुराणों में देखने के लिए मिलते हैं। परंतु पुराणों के किन्नर और आधुनिक युग के किन्नरों की स्थिति में बहुत अंतर है। इनसे संबंधित सर्वाधिक प्रचलित पौराणिक कथा रामायण का एक प्रसंग है, जो भगवान श्री राम के वनागमन से संबंधित है। कहा जाता है कि जब पिता कि आज्ञा का पालन करते हुए राम लक्ष्मण और सीता सहित चित्रकूट आ गए तो उन्हें मनाकर वापस अयोध्या ले जाने के लिए भरत अयोध्यावासियों के साथ चित्रकूट आये थे। लेकिन प्रभु श्री राम ने भरत तथा अयोध्यावासियों की अनुनय विनय को अस्वीकार कर सभी नर-नारियों को वापस जाने की आज्ञा देते हैं परंतु उन्होंने किन्नरों के लिए कुछ नहीं कहा, जबकि वे उन्हें मनाने के लिए वहाँ आये हुए थे। कहा जाता है कि उनके लिए प्रभु श्री राम ने कोई स्पष्ट आदेश न देने के कारण उन किन्नरों ने 14 वर्षों तक वहीं रुककर प्रभु श्री राम की वापसी की प्रतीक्षा करने का निर्णय लिया। प्रभु श्री राम जब वनवास पूर्ण कर वापस अयोध्या लौट रहे थे तो उन्होंने इन किन्नरों को चित्रकूट में अपनी प्रतीक्षा करते हुए पाया। प्रभु श्री राम ने उनके वहाँ रुकने का कारण पूछा तो किन्नरों ने बताया कि जब हम भरत के साथ यहाँ आपको मनाने के लिए आये थे तो आपने कहा था-

जथा जोगु करि विनय प्रनाम, बिदा किए सब सानुज रामा।
नारि पुरुष लघु मध्य बड़ेरे, सब सनमानि कृपानिधि फेरो ॥"1

कहा जाता है कि प्रभु श्री राम किन्नरों की इस निश्छल और निःस्वार्थ भावना से अत्यधिक प्रसन्न हुए और उन्होंने प्रसन्नता से किन्नरों को वरदान दिया कि कलियुग में तुम लोग राज करोगे। तुम जिन्हें अपना आशीर्वाद दोगे, उसका कभी अनिष्ट नहीं होगा। इसलिए जब कभी किसी के घर में खुशियाँ मनायी जाती हैं तो उन खुशियों में शामिल होने के लिए किन्नर भी वहाँ उपस्थित होते हैं। खुशियों के गीत गा कर दुआएँ दे जाते हैं। ऐसे शुभ अवसर पर ग्रहस्थ भी उन्हें सहर्ष स्वागत करते हैं और नेग भी देते हैं। महाभारत में भी इनका उल्लेख मिलता है। शिखंडी तथा बृहनल्ला के रुप में। राजा - महाराजाओं ने भी किन्नरों को महत्वपूर्ण स्थान दिया था। इनकी नियुक्ति रानियों की पहरेदारी के लिए होती थी। मुस्लिम शासन में हरमें की सुरक्षा के लिए हिजड़े ख्वाजासरा के नाम से सुरक्षाकर्मी के रुप में तैनात किए जाते थे। अतीत का द्वार खटकते हैं

Scanned by CamScanner

तो किन्नरों की स्थिति सभी दृष्टियों से सुव्यवस्थित ही थी। लेकिन आज इनकी ऐसी स्थिति क्यों है? इनकी इस स्थिति का कारणकर्ता कौन है? उत्तर में केवल इतना ही कह सकते हैं कि हमारी सामाजिक व्यवस्था ही इसके लिए मुख्य कारण है। इनके जीवन को अर्थ प्रदान करना हो तो इन्हें प्रमुखतः समाज के मुख्य धारा पर लाने का प्रयास करना है।

एक निर्धारित लिंग के कमी के कारण त्यागे गये, दुरदुराए गये, सताए गये, अपमान के भागी, तिरस्कृतों को विश्व के संपूर्ण समाज में कई नामों से पहचाना जाता है। हिजड़ा, किन्नर, बृहन्नला, छक्का, शिकंडी, हिजरा, कोज्जा, अरावली, खुसरा, उभयलिंगी, तृतीयलिंगी, खदरा, यूनक, खोजवा, मौगा, खुस्त्रा, जनखा, ख्वाजासरा, नपुंसक, किन्नर, मंगलमुखी, कोथी, जोगप्पा, एफ.टू.एम., लेस्बियन आदि कई नामों से संबोधित हैं। हिजड़ा उर्दू शब्द है जो अरबी के हिज्र से लिया गया है। जिसका आशय अपने कबीले को छोड़ना है। अर्थात् घर-परिवार एवं समाज से अलग होना। 2 जिनके जननांग न तो स्पष्ट रुप से पुरुष के होते हैं न स्त्री के उन्हें किन्नर या लोकप्रिय संबोधन हिजड़ा कहा जाता हैं। समाज में उनको घृणा की दृष्टि से देखा जाता है जबकि किन्नर भी मानव समाज का ही अंग है। मनुष्य रुप में जन्म लेने के अतिरिक्त किन्नर अभिशप्त जीवन जीने के लिए विवश हैं। किन्नरों के साथ होने वाले भेदभाव से उनका मनोबल टूटता है। उनके लिए न ही रोजगार की व्यवस्था है और न ही उनकी खुद की परिवार जैसी इकाई। सामाजिक भेदभाव की यह स्थिति समाप्त होनी चाहिए। डॉ. सूरज बड़त्या की लिखी कहानी कबीरन में किन्नर कबीरन कहती है कि अगर तुम चाहते हो कि कभी-भी कोई कबीरन घर से बेदखल न हो तो समाज की मानसिकता को बदलने का प्रयास करे। हम भी इंसान हैं, सांसे हैं, सपने हैं। हम तुम जैसे औरत या आदमी नहीं है तो क्या हुआ? तुम्हारी दुनिया हमें सामान्य नहीं मानती। जबकी तुम लोग सामान्य नहीं। ज़ेहनी बीमार हो। कभी जात में, कभी धर्म में, कभी औरत-मर्द में भेदभाव किये रहते हो। बीमार समाज है तुम्हारा। इसकी बीमारी दूर करने की कोशिश करो। बस हमारे जैसा इंसान-सा बर्ताव करो। 3 जितने सुलजे हुए विचार एक किन्नर में हो सकते हैं वे सामान्य मानव में क्यों नहीं हो सकते? इनको पहचान दिलाने में कोई कुछ बोलता क्यों नहीं है? समाज का एक वर्ग ऐसा है जो दलित कहलाता है और जाति व्यवस्था के कारण सवर्ण समाज से दूर रहते हुए भी समाज का एक हिस्सा तो हैं। ये किन्नर तो दलितों में भी दलित हैं। ऐसे किन्नरों के प्रति सुमेघ सहानुभूति व्यक्त करते हुए कहता है कि हिजड़े समुदाय के लिए ऐसी हैवानियत और बेदखली किस वैचारिक सत्ता की बदौलत है?

Scanned by CamScanner

ISBN : 978-93-83813-31-5

भारतीय साहित्य का अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य

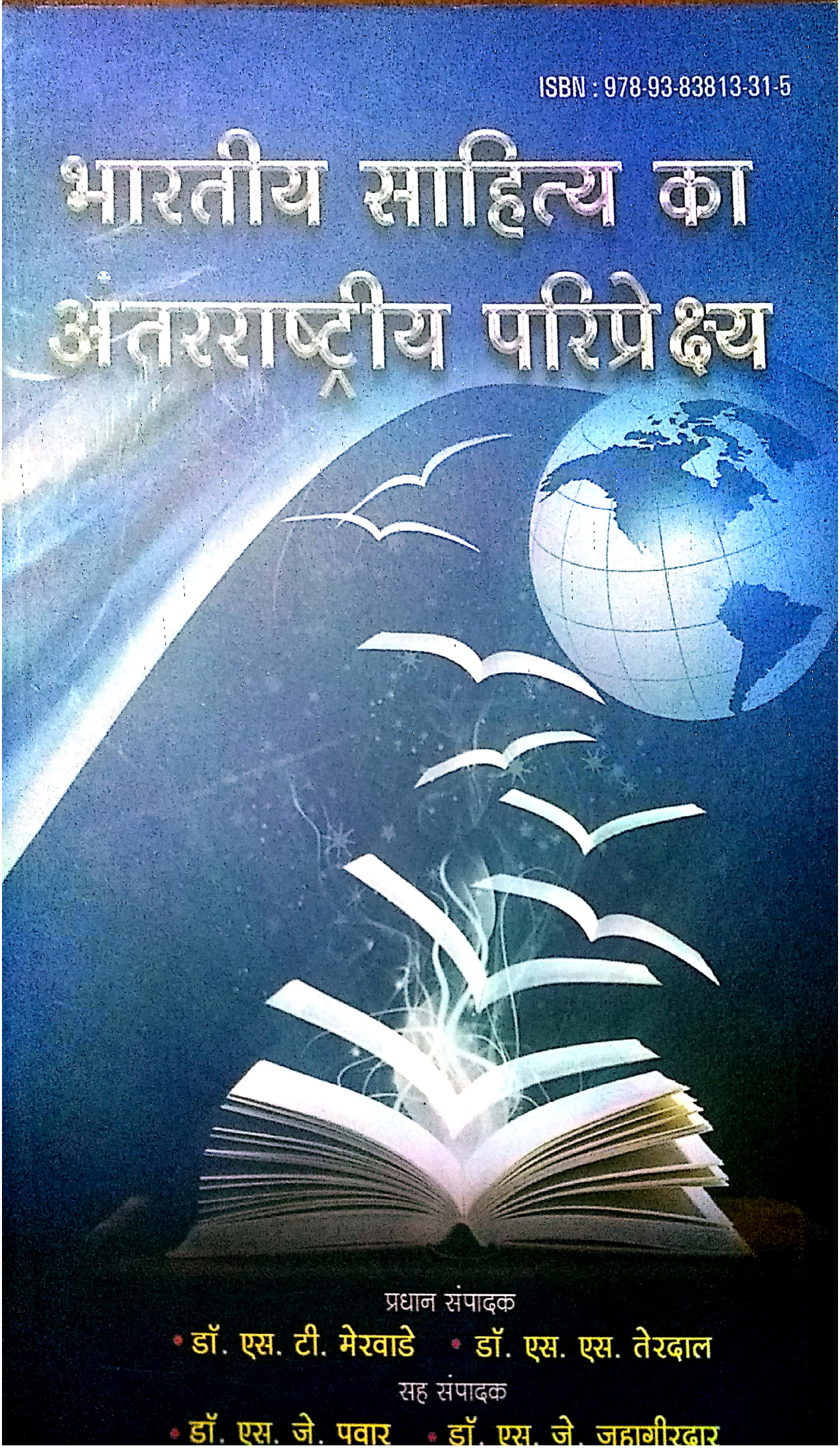

प्रधान संपादक

• डॉ. एस. टी. मेरवाडे • डॉ. एस. एस. तेरदाल

सह संपादक

• डॉ. एस. जे. पवार • डॉ. एस. जे. जहागीरदार

Scanned by CamScanner

BHARATIYA SAHITYA KA ANTARARASHTRIYA PARIPREKSHYA :

ISBN 978-93-83813-31-5

Publisher : Soumya Prakashan
Kabeer Kunj, Mahabaleshwar Colony
Vijayapur - 586 103

© Publisher

First Edition : 2018

Copies : 1000

Pages : xii + 448 = 460

Price : Rs. 300/-

Book Size : Demy 1/8

Paper Used : 70 GS.M. N. S. Maplitho

भारतीय साहित्य का अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य

प्रधान संपादक : डॉ. एस. टी. भेरजाडे, डॉ. एस. एस. तेरदाल

सह संपादक : डॉ. एस. जे. पवार, डॉ. एस. जे. जहागीरदार

ISBN 978-93-83813-31-5

प्रकाशन : सौम्य प्रकाशन
'कंबीर कुंज', महाबलेश्वर कॉलनी,
विजयपुर - 586 103 (कर्नाटक)

प्रथम मुद्रण : 2018

© प्रकाशक

प्रति : 1000

पृष्ट : xii + 448 = 460

मूल्य : रु. 300/-

बुक साईज : डेमी 1/8

पेपर : 70 जी.एस.एम. एन. एस. म्यापलिथो

मुद्रक :

त्वरित मुद्रण आफसेट प्रिन्टर्स

विठ्ठल मंदिर रोड, गदग - 582 101

Email : chaitanyaoffset@gmail.com
Mobile : 8884495331, 9448223602

Scanned by CamScanner

58. हिन्दी साहित्य में (आर्थिक रूप से विपन्न) नारी: एक अध्ययन
• डॉ. के. वी. कृष्णमोहन 288

59. बाल साहित्य और उसकी विधाएँ
• डॉ. अनीता एम. बेलगाँवकर 293

60. सर्वोदय तथा छायावादी काव्य का आदान - प्रदान
• डॉ. मालतेश स. बरामनवर 296

61. निम्नवर्ग के बच्चों में शिक्षण की समस्याएँ और समाधान साहित्य अमृत पत्रिका में प्रकाशित कहानियों के संदर्भ में
• सोनाली तेरदाले 302

62. हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श
• सुनिता रा. हुनरगी 305

63. 'सुनामी सड़क' में चित्रित पर्यावरण विमर्श
• वर्षाराणी जबडे 310

64. नई सदी के हिंदी लेखिकाओं के उपन्यासों में अंकित राजनीतिक मूल्य
• अमोल तुकाराम पाटील 315

65. मंजूर एहतेशाम के कहानियों में चित्रित अल्प संख्यक विमर्श
• फिरोज बालसिंग 319

66. हिंदी महिला काव्य में बदलता परिवेश (स्त्री सशक्तिकरण के संदर्भ में)
• वीरेश बिसनल्लि 322

67. नरेश मेहता के काव्यों में आधुनिक बोध
• शिवराजकुमार कल्लूर 325

68. आदिवासी उपन्यास और भूमंडलीकरण
• शेख सादिक पाषा 332

69. सुशीला टाकभौरे की कविताओं में स्त्री चिंतन
• डॉ. मीनाक्षी बी. पाटील 334

Scanned by CamScanner

सुशीला टाकभौरे की कविताओं में स्त्री चिंतन

• डॉ. मीनाक्षी बी. पाटील

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः॥

कहा जाता है कि समाज में या जहाँ स्त्री जाति का आदर सम्मान होता है, उनकी आवश्यकताओं, अपेक्षाओं, आकांक्षाओं की पूर्ती होती है, उस स्थान, समाज तथा परिवार पर देवतागण प्रसन्न रहते हैं। जहाँ स्त्रीयों का तिरस्कार किया जाता है, वहाँ देवताओं की कृपा नहीं रहती है और वहाँ संपन्न किये गये कार्य भी सफल नहीं होते हैं। अब प्रश्न यह उठता है कि समाज सदियों से स्त्री के प्रति आदर तथा सम्मान की बात करता आ रहा है तो 21 वीं सदी में 'स्त्री विमर्श' ने क्यों जन्म लिया? स्त्रीयों को अपने अधिकार की, स्वतंत्रता की लडाई क्यों लडनी पडी ? आज स्त्री हाशिए पर क्यों खडी है? स्त्री विमर्श के द्वारा स्त्रीयों को केन्द्र में लाने का प्रयास क्यों किया जा रहा है ? क्यों उसे संघर्ष करना पड़ रहा है आदि आदि। और इन सारे प्रश्नों का उत्तर एक ही हो सकता है 'स्त्री विश्व की सर्वप्रथम दलित' है। स्त्री संघर्ष किसी एक देश की नहीं बल्की वह वैश्विक विचारधारा बनी है। परंतु प्रत्येक देश की स्त्रीयों का संघर्ष वहाँ के सामाजिक परिवेश पर निर्भर करता है। सामाजिक स्तर पर हो रहे इस संघर्ष को जब साहित्य में स्थान मिला तो वह स्त्री विमर्श के रूप में अलग से स्त्री साहित्य का रूप ग्रहण करता है। इक्कीसवीं सदी की नये साहित्यिक प्रकार ने खासकर स्त्रीयों को अपने खुले विचारों को प्रकट करने के लिए एक खुला मंच तैयार करके दिया है। इस मंच पर सदियों से चले आ रहे मौन को अभिव्यक्ति मिलने लगी है।

स्त्री विमर्श रूढ़ हो चुकी मान्यताओं, परंपराओं के प्रति असंतोष व उससे मुक्ति का स्वर है। स्त्री विमर्श ने आज समाज में स्त्रीयों को नये दृष्टिकोणों से देखने का प्रयास किया है। स्त्री विमर्श पितृसत्तात्मक समाज के दोहरे नैतिक मापदंडों, मूल्यों व अंतर्विरोधों को समझने व पहचाने की गहरी अंतर्दृष्टि है। पितृसत्तात्मक समाज में जहाँ स्त्री और दलित स्त्री की बात उठती है तो, जिस समाज में सवर्ण स्त्रीयों को भी प्रताडित होना पड़ रहा है उसी समाज में वर्णव्यवस्था के कारण दलित समाज की स्त्रीयों की स्थिति कैसी हो सकती है यह विचारणीय है। जातिवाद के विरोध में हर समय अपने यहाँ लडाई लड़ी गई है। सर्वप्रथम 563 ई. पू. में गौतम बुद्ध ने यह लडाई लड़ी। 12वीं शताब्दी में बसवेश्वर ने। 18वीं शताब्दी में ज्योतिबा फूले ने और 19वीं शताब्दी में डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर ने। वास्तव में डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर ही दलित साहित्य के लिए प्रेरणा स्रोत रहे हैं। डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर के विचारों से प्रभावित होकर ही दलित साहित्य की रचना की जाने लगी। दलित साहित्य दलितों की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक संदर्भों के अंतर्गत अन्याय, विषमता, अत्याचार दमन, यातना, शोषण, अमानवीयता के अछूते पहलुओं को दस्तक देते हुए दलित समाज के संघर्ष तथा विद्रोह को उभारता है। वैसे में दलित स्त्रीयों का शोषण शोषितो का शोषण है।

वास्तव में हिन्दी साहित्य में दलित कविताओं का आरंभ आधुनिक काल से माना जा सकता है। महावीरप्रसाद द्वीवेदी द्वारा 'सरस्वती' पत्रिका में 'हीराडोम' नाम को भोजपुरी कविता 'अछुत की शिकायत' नाम से छपी थी। यह हिन्दी की प्रथम दलित कविता मानी जाती है। तत् पश्चात् हिन्दी के कुछ कवियों ने अपनी कविता में दलित चेतना को व्यक्त करने का प्रयास किया। 21 वीं सदी के दौर में दलितों के जीवन संघर्ष, चेतना तथा परिवर्तन को लेकर कविताएँ लिखी जा रही है। इन कविताओं के माध्यम से दलितों का संघर्ष, आंदोलन, अज्ञानता, पीडा, व्यथा, आदी का चित्रण किया जा रहा है।

स्त्री सवर्ण हो या दलित वह केवल 'अन्या' है। वह पुरुष के लिए मात्र भोग की वस्तु है। सिमोन द बोउवार स्त्री: उपेक्षिता में लिखती हैं कि "वह अनिवार्यतः पुरुष के लिए भोग वस्तु है और इसके अलावा कुछ भी नहीं"

Scanned by CamScanner

(स्त्री: उपेक्षिता,पृ. सं-23) स्त्री केवल सेवा के लिए ही बनी हुई है. अमीर हो या गरीब, श्वेत हो या श्याम तन की उसे अपनी लडाई स्वयं लडनी होगी। समाज में स्त्रीयों कि स्थिति ही दलितों की स्त्री रही हो तो दलित स्त्रीयों की स्थिति कैसी रही होगी? दलित स्त्रीयों को तो दोहरे अभिशाप से गुजरना पड़ता है। प्रथमतः स्त्री होने के कारण और दूसरा वह दलित स्त्री होने के कारण। दलित महिला रचनाकारों ने दलित वर्ग के भीतर व्याप्त लिंग आधारित अंतर्विरोध को गहराई से अनुभव किया और उन्हें बेझिझक अभिव्यक्ति भी दी है।

हिन्दी के दलित साहित्य में जिन्हे दलित महिला रचनाकारों ने दलित और स्त्री अस्मिता के लिए जमीन तैयार की। उनमें सुशीला टाकभौरे का नाम उल्लेखनीय है। वे लंबे समय से लेखन कार्य में कार्यरत रही हैं। उन्होंने कविता, उपन्यास, कहानी, आत्मकथा, कई आलोचनात्मक लेख लिखे हैं। सुशीला टाकभौरेजी के कविता संग्रह है- 'स्वाती बूँद और खारे मोती' (1992), 'यह तुम भी जानो' (1994), 'तुमने उसे कब पहचाना' (1995), 'हमारे हिस्से का सूरज' (2005)। दलित स्त्री प्रश्नों पर केंद्रित इन रचनाओं में सप्पाई कर्मियों की यातना, समस्या, दलित समाज की सुप्त चेतना, शोषण, दमन, उत्पीडन, दलित स्त्रीयों की प्रताडना, संघर्ष का सजीव चित्रण मिलता है।

स्त्री चेतना को अभिव्यक्त करते हुए 'मासूम भोली लडकी' कविता में लिखती है कि-

''भीड़ से अलग/अपनी पहचान बनानी है
तुम्हे जूझना है
आकाश को चूमना है
इसलिए अपने से अलग
रख दिया है मैंने तुम्हें
ताक पर''

सवर्ण स्त्रीयों की भाँति दलित स्त्रीयाँ भी पितृसत्ता का दंश अवश्य ही झेलती है। वैसे भी समाज में प्रत्येक स्त्री की दशा दलितों से गई गुजरी रही है, तो दलित स्त्रीयों की क्या दशा रही होगी यह हमें सोचने पर मजबूर करती है। पितृसत्ता को झेल रही इन स्त्रीयों में चेतना उत्पन्न कर स्त्रीयों को अपनी स्वतंत्र छवी को बनाने के लिए कहती है। इसके साथ ही यह सुझाव भी देती है कि हमें

यह स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए, जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए संघर्ष करना होगा।

विश्व की संपूर्ण स्त्रीयाँ पितृसत्तात्मकता की शिकार बनी हुई है। सदियों से स्त्रीयों को किस्सागोई का पाठ पढ़ाकर उसे पुरुष परतंत्रता में जकड दिया गया है। स्त्री सदियों से ठगी जा रही है। स्त्री: उपेक्षिता में सिमोन द बोउवार लिखती है कि ''औरत को औरत होना सिखाया जाता है। औरत बनी रहने के लिए उसे अनुकूल किया जाता है।''2 (पृ.सं-21) सुशीला टाकभौरे ने स्त्रियों से ऐसे बंधनों को तोडने लिए आग्रह किया है।

स्त्रियाँ सदियों से ठगी जा रही है। उसने कुछ स्वतंत्रता प्राप्त की भी है तो उतनी ही जितना उसे पुरुष ने अपनी सुविधा के लिए देना चाहा है। लेकिन आज प्रत्येक स्त्री ऐसे बन्धनों से मुक्त होना चाहती है। स्त्री मुक्ति पर स्त्री: उपेक्षिता में सीमोन द बोउवार लिखती है कि ''वह सदियों से ठगी गई है। यदि उसने कुछ स्वतंत्रता हासिल भी की है, तो उतनी ही, जितनी कि पुरुष ने अपनी सुविधा के लिए उसे देना चाहा। अतः सीमोन का मुक्ति-संदेश उस आधी दुनिया के लिए है, जो स्त्री कहलाती है।''3 (पृ.सं-19) लेखिका स्त्रियों की तुलना गली मोमबत्ति से करते हुए कहती है कि स्त्रीयों में स्त्री मुक्ति की ज्वाला जंगल की आग की तरह फैल रही है। उसे बुझाने का प्रयत्न करेंगे तो भी वह आग नहीं बुझेगी।

सदियों से स्त्री अधिनस्थ रही है। इसी अधिनस्थता के कारण स्त्रियों पर सदियों से हो रहे शोषण का वह खुलकर विरोध कर रही है। सीता, दौपदियों ने अगर प्राचीन काल से ही स्त्री पराधीनता, शोषण, वंचना आदि का विरोध करते तो आज हमें 'स्त्री विमर्श' या 'दलित विमर्श' पर अवाज उठाने की आवश्यकता नहीं होती। 'पीडा की फसलें कविता में लिखती हैं-

''संवेदना दिखाना बन्द करो
तुम्हीं ने तो सीता को
धरती में समाजाने को मजबूर कर दिया था
तब से
विश्वास, भक्ति और प्रेम से पगी सीता
बार-बार

Scanned by CamScanner

धरती में दफनाई जाती रही है
इसलिए
पीडा की फसलें
उगती रही हैं।''

स्त्री विमर्श पर विचार अभिव्यक्त कर रहे उन लेखकों पर प्रतिहार करते हुए कहती हैं कि स्त्रीयों के प्रति संवेदित होना बन्द करो। क्योंकि तुम्ही ने सीता को बार-बार धरती में दफनाया है। तुम्हारे ही कारण समाज में स्त्रीयों को बार-बार प्रताडित होना पड़ रहा है।

जब स्त्री पराधीन थी तब वह दुनिया को पुरुष के चश्मे से देखती थी। लेकिन अब उसने दुनिया को अपने दृष्टिकोण से देखने का प्रयास किया है। उसमें चेतना जागृत होने लगती है । इसलिए लेखिका 'मासूम भोली लड़की हैं कि

''वह देखना चाहेगी
आसमान, पक्षी पतंग
उडान चाहेगी दूर बहुत दूर
दुनिया को अपनी नजर से देखेगी।''

इसलिए वह 'गाली' कविता में समाज से प्रश्न करती है कि स्त्री को एक गाली क्यों बना दिया गया है। लेखिका लिखती हैं कि-

''कुत्ता और कुतिया एक दूसरे के पूरक हैं
चरित्र के नाम
कुत्ता वफादार
और
'कुतिया' गाली क्यों बन जाती है।''

पुरुष प्रधान समाज में पुरुष को स्त्री का होना विद्वेष की बात है। सीमोन द बोउवार स्त्री के प्रति पुरुष मानसिकता को व्यक्त करती हुई लिखती है कि ''औरत का होना पुरुष के लिए एक विद्वेषपूर्ण स्थिति है।''4 (पृ.सं-31) स्त्री पुरुष एक दूसरे के पूरक रहे हैं तो स्त्री को समानता की दृष्टि से क्यों नहीं देखा जाता ? स्त्री को गाली क्यों समझी जाती है? जबकि आज स्त्रीयों में परिवर्तन लाने की क्षमता है। पुरुष रुपी हिंसक जंतुओं से लडने की क्षमता भी आज उसने प्राप्त की है ।

'लेकिन कब तक' कविता में स्त्री शोषण तथा संघर्ष को दर्शाते हुए, पितृसत्तात्मक समाज से स्त्री मुक्ति की आवाज उठाई जा रही है। अब तक समाज ने स्त्रीयों को अपना गुलाम बना दिया था। लेकिन आधुनिक समाज की स्त्री इस गुलामी से मुक्त होने के लिए ज्वाला मुखी बनने के लिए भी तैयार है। स्त्री की गुलामी पर सीमोन द बोउवार लिखती है कि ''नारी को गुलाम बनाने में सफल होकर पुरुष ने नारी को उन गुणों से वंचित कर दिया, जो उसे अधिक वंचित बना सकते हैं। समाज और परिवार के बंधनो के बीच नारी की सोहिनी-शक्ति नष्ट हो गई, वह बढ़ी नहीं। वह दासस्वरुप बन गई ।''5 (पृ.सं-103) आज की स्त्रीयाँ ऐसी दासता जड़ों से उखाड फेंकना चाहती हैं । लेखिका लिखती है कि-

''मन की चट्टान पर
जब भी चोट पडती है
सब ओर
एक अग सी फैस जाती है
धुंधआती अधजली आग
ज्वालामुखी होकर
धरती-सी फूट पड़ती है
लोग भूकम्प की बात को
सहज मानते हैं
स्त्री ज्वाला-मुखी हो सकती है
यह भी तो सहज बात है।''

लेखिका ने दोहरे अभिशाप में अभिशप्त दलित स्त्रियों के प्रति चट्टान की भाँति खडे होकर पुरुषों को आगाह करने की चेष्टा की है कि स्त्रीयों ने अब तक जो पीडा, वेदना, आदि को झेल लिया है । लेकिन और अब नहीं । वह अन्याय और स्त्री शोषण के विरुद्ध ज्वाला-मुखी भी बन सकती है।

स्त्री मुक्ति, स्त्री शोषण पर आवाज अगर उठा रहे हैं तो समाज से लडने की क्षमता होनी चाहिए। इसके लिए हमारे अंदर आत्मविश्वास का होना अत्यावश्यक है। इसलिए समाज से पिछडे, दमित, पीडित दलित स्त्रीयों में आत्मविश्वास भरते हुए लिखती हैं कि

Scanned by CamScanner

'दिखाना चाहती हूँ
लडकी। तुम किसी पर निर्भर नहीं
स्वयं पूर्ण हो
तुम मुझसे अलग नहीं
पर तुम्हारा अलग अस्तित्व है
तुम्हारी राह, तुम्हारी मंजिल
मुझसे बहुत आगे है''

आत्मविश्वास को उत्पन्न करते हुए अन्यों को प्रेरणा देती है। वह लिखती है कि

''वह बदलेगी अब
सदियों की परिपाटी
नही हारेगी कभी
नही हारेगी।''

दलितों पर हो रहे अन्याय, शोषण, दमन आदि का जो परिपाटी सदियों से चलती आ रही है उसका अंत शीघ्र ही होगा।

क्योंकि तुम (दलित स्त्रियों से कहती है) थककर, हारकर चुप बैठनेवाली में से नहीं हो। तुम समाज को सशक्त बनाओगी। समाज में व्याप्त जातिव्यवस्था का विरोध करेगी। जातिव्यवस्था के इतिहास को नये सलीके से नये पृष्ठों पर लिखने का प्रयास करोगी।

शुशीला टाकभौरें की इन कविताओं से प्रतीत होता है कि लेखिका ने जीवन की विडम्बनात्मक स्थितियों को, उनकी पीडा, संघर्ष, संवेदना आदि को अत्यंत मार्मिकता से किया है। ऐसी कविताओं से कहीं न कहीं स्वयं को पहचानकर स्वयं को तराशने के लिये सहायता मिलती है। लेखिका ने दलित समाज तथा महिलाओं के लिए चुनौति बन कर खडे रहें पिसत्तात्मक, जातिवाद, निरक्षरता, तंगहाली, अस्पृश्यता आदि का चित्रण किया है। इन कविताओं के माध्यम से महिलाओं को परिस्थिति से लडने के लिए आत्मविश्वास उत्पन्न करने का प्रयास करती हैं ।

हिन्दी विभाग बी.एल्.डी.ई. सस्था बसवेश्वर कला औं वाणिज्य महाविद्यालय बसवन बागेवाडी-586203

Scanned by CamScanner